

ओ३म्

वार्षिक शुल्क 50/- रु.
आजीवन 500/- रु.
इस अंक का मूल्य 5/- रुपये

आर्य



प्रेरणा

कृण्वन्तो

विश्वमार्यम्

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक मुख-पत्र)

दूरभाष: 011-25760006 Website - www.arysamajrajindernagar.org

वर्ष-8 अंक 8, मास दिसम्बर 2016 विक्रमी संवत् 2073

दयानन्दाब्द 189 सृष्टि संवत् 1960853115,

सम्पादक आचार्य गवेन्द्र

शुद्धि यज्ञ के ब्रह्मा-स्वामी श्रद्धानन्द जी

- डॉ. महेश विद्यालंकार

स्वामी श्रद्धानन्द ऋषि दयानन्द के सच्चे अर्थ में उत्तराधिकारी थे। ऋषि के जो आदर्श मन्तव्य, चिन्तन एवं धारणाएं थीं, उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द ने क्रियात्मक साकार रूप दिया। अपने गुरु के प्रति स्वामी जी की श्रद्धा, निष्ठा, लगन एवं समर्पण प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। स्वामी जी का धर्म-शिक्षा, राजनीति, समाज-सेवा आदि प्रत्येक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने दलितोद्धार एवं शुद्धि आन्दोलन को जो बल, प्रेरणा, भावना और महत्त्व दिया वह उल्लेखनीय व स्मरणीय है।

स्वयं स्वामी जी ने रायसाहब शारदा जी से कहा था... "मैंने शेष जीवन के लिए अन्तिम प्रोग्राम अछूतोद्धार शुद्धि और संगठन ही निश्चय किया है। इसके बिना आर्य जाति जीवित नहीं रह सकती है।" उनके द्वारा संचालित शुद्धि-यज्ञ का चक्र देश के कोने कोने में तेजी से चला। जो जन स्वधर्म, स्वदेश, स्वभाषा एवं एक संस्कृति से विमुख हो रहे थे। उन्हें स्वामी

जी ने पुनः शुद्धि द्वारा गले लगाया। ये अज्ञान, भ्रम, लोभ, लालच तथा बहकाने से स्व स्वरूप को भूल चुके हैं। इनके लिए वैदिक-चिन्तन के द्वार खुले हैं। इनसे घृणा, द्वेष मत करो। ये दया और सहानुभूति के पात्र हैं। ये हमारे भूले भटके, बिछुड़े हमारे ही भाई-बहिन हैं। इन्हें हम को शुद्धि के द्वारा पुनः नवजीवन की प्रेरणा देनी है। तभी हमारे यह नारे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्', सर्वे भवन्तु सुखिनः, वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु" पूरे होंगे। हम सब एक पिता प्रभु की सन्तान हैं। हमारे पालन-पोषण, प्रकृति प्रदत्त साधन, जलवायु, अग्नि, तेज, प्रकाश, वनस्पति, खान-पान समान हैं। फिर परस्पर भेद कैसा? ऊंच नीच, भेद-भाव क्यों? मानव मानव के बीच दीवार कैसी? मनुष्य को पशुओं से भी निकृष्ट क्यों समझा जाता है? क्यों नहीं उसे जो पतित हो गया, दलित बन गया, विधर्मी होकर जी रहा है, उसे ऊपर उठने का अवसर दिया जाता है। यह वेदना स्वामी श्रद्धानन्द को निरन्तर साताती

रहती थी। वे निरन्तर शुद्धि-आन्दोलन को व्यापक, व्यावहारिक और गतिशील बनाने के लिए अधीर आकुल व दीवाने रहते थे। उन्हें मारने की कई बार धमकियां मिल चुकी थीं। उनके इस शुद्धि व दलितोद्धारक चिन्तन एवं आन्दोलन से तत्कालीन बड़े-बड़े राजनेता, देश के तथाकथित धर्माचार्य, असन्तुष्ट तथा नाराज रहते थे। किन्तु धुन का धनी, संकल्पी, प्रभु-भक्त, निर्भीक स्वामी श्रद्धानन्द अपने शुद्धि-अभियान को निरन्तर आगे बढ़ाते रहे। यहां तक कि उन्हें अपने प्राण भी इसी शुद्धि-महायज्ञ में आहुत करने पड़े। किन्तु वे अमृतपुत्र होकर पीए। उन्हें मृत्यु सत्पथ से विचलित नहीं कर सकी। वे किसी विधर्मी के भय, डर से भयभीत नहीं हुए। उनका तो यही नारा ओर सन्देश था...

दलित आ जा, पतित आ जा, तृषित आ जा, मिल न पाया, जिनको प्यार, उनको प्यार देना है।

उनके हृदय में दीनों, हीनों, पतितों, दलितों आदि के लिए अपार प्रेम... दया, करुणा थी। वे शुद्ध हृदय से मुसलमानों, ईसाइयों को गले लगाकर उन्हें आर्य धर्म में दीक्षित करना चाहते थे। यही उनकी

'आर्य-प्रेरणा' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अन्तिम इच्छा थी जैसा कि उन्होंने अपने सहयोगी स्वामी चिदानन्द से पत्र लिखवाया था। उनमें चर्चा की है।

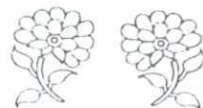
“मेरा यह शरीर इस योग्य नहीं रहा कि जिससे कोई काम ले सकूँ। इसलिए अब तो मेरी यह कामना है कि इस पुराने शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करूँ और फिर भारत में आकर शुद्धि के द्वारा देश व जाति की सेवा करूँ।”

आज की परिस्थिति, सन्दर्भ, हालात, विचार, लोग सभी तेजी से परिवर्तित हुए हैं और हो रहे हैं। इस बदलाव और भटकाव में आर्यसमाज के लोग भी मूल ध्येय से हटते हिलते जा रहे हैं। उसी का परिणाम है कि हमारे संगठन, मंदिर, संस्थाएं, परिवार एवं व्यक्ति दयानन्द, श्रद्धानन्द और आर्यसमाज के उद्देश्यों के अनुकूल नहीं बन पा रहे हैं? यह प्रश्न चिन्ह सर्वत्र चर्चा का विषय है। इस प्रसंग में स्वामी श्रद्धानन्द का अमर स्मारक गुरुकुल कांगड़ी का उदाहरण ही पर्याप्त होगा। जो संस्था संसार को धर्म-चरित्र, जीवन, नैतिकता, सदाचार एवं आध्यात्मिकता का सन्देश दे सकती थी वह अपने में एक समस्या बन रही है? अधिक विवेचन अपेक्षित नहीं है। ऐसी विकट स्थिति में जबकि राष्ट्र धार्मिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, पारिवारिक वैयक्तिक, शैक्षणिक प्रत्येक दृष्टि से दिशाहीन, एवं किं कर्तव्यविमूढ़ की हालात से गुजर रहा है। यदि आर्य समाज अपनी अस्मितास्वरूप, धैर्य, चिन्तन एवं आदिमधरोहर को जाने, माने, और पहचाने तो राष्ट्र को दिशा और मोड़ दे सकता है। यह तभी संभव है जब हम आर्य समाजी दयानन्द, श्रद्धानन्द और हंसराज के अनुयायी, ईसाई मुसलमानों की शुद्धि से पहले अपनी आत्मशुद्धि का व्रत व संकल्प लें। आत्मनिरीक्षण करें। हृदय दोषों को मजबूती से पकड़ें। प्रेरक महापुरुषों के

व्यक्तित्व और कृतित्व से सेवा, त्याग, उपकार, विनम्रता का पाठ पढ़ें।

संगठन, संस्था, मन्दिर एवं समाजों में मात्र सेवा, त्याग को महत्त्व दिया जाए। धन बल, जनबल, संगठन बल स्वतः खिंच चला आएगा। आज आर्यसमाज की प्रेरक, आदर्श, धर्मवान, चरित्रवान, त्यागी, सेवा भावी लोगों की बड़ी आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानन्द का यह वाक्य बड़ा ही सटीक एवं मजबूत है। आज आर्यसमाज की नेताओं की नहीं, सेवकों की जरूरत है। कैसी विचित्र विडम्बना है कि इतने स्कूल, कालेज, गुरुकुल, संगठन, आश्रम हैं, किन्तु एक भी हंसराज, श्रद्धानन्द, गुरुदत्त, लेखराम, दर्शनानन्द नहीं बन सका? सोचो, विचारो, और सच्चे अर्थ में आर्यत्व के गुण, कर्म, स्वभाव को लाने का संकल्प करो, स्वामी श्रद्धानन्द जैसा अद्भुत चरित्र हमारी धरोहर है, इतना गिरकर, इतना ऊपर उठ सकता है मानव, यह प्रेरणा स्वामी जी का जीवन पुकार पुकार कर दे रहा है।

स्वामी श्रद्धानन्द का स्वप्न अधूरा है। उनकी अन्तिम इच्छा भटक रही है। बलिदान दिवस हर वर्ष मनाते हैं। किन्तु, परन्तु, लेकिन- कुछ सीख नहीं ले पाते हैं? यही कमी है। उनके शुद्धि आन्दोलन को तन, मन, धन से आगे बढ़ाना है। मानवता प्रेम, दया, करुणा सहानुभूति के व्यवहार से सबको अपना बनाना है। जो विधर्मी हमारे भाई बहनों को लोभ लालच, बलात् वर्ग भेद, जाति, भाषा, सेवा, प्रेम आदि के नाम पर हम से अलग कर रहे हैं। उनके पास जाना होगा। उन्हें अपनाना होगा। आर्यसमाज के अतिरिक्त कोई इस जटिल कार्य को नहीं कर सकता है। यही स्वामी श्रद्धानन्द की अन्तिम इच्छा थी। “देखो मैं रहूँ या न रहूँ, किन्तु मेरे बाद शुद्धि का काम बन्द न होने पाये।”



स्वामी श्रद्धानन्द की मार्मिक अपील

सेवक बनने का यत्न करो

भारतवर्ष के आर्य-नवयुवकों के अखिल-भारतवर्षीय संगठन का नाम ‘आर्य-कुमार-सम्मेलन, था। देहली में सम्मत् 1970 में 22-23 आश्विन को होने वाला चौथा अधिवेशन स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के सभापतित्व में हुआ था। अपने ओजस्वी भाषण में आपने अपने को सभापति निर्वाचित करने का कितना सुन्दर कारण बताया था? आपने कहा था-

“आज मेरे बाल सफेद हो गए हैं, तथापि आर्य समाज के वृद्ध सेवकों में, काम करते हुए नेताओं में, नवयुवक से नवयुवक हृदय से भी अधिक मैं अपने हृदय को नवयुवक पाता हूँ। आप इसे अभिमान समझें। मैं इस अभिमान का दोष अपने सिर पर लेने को तैयार हूँ। मुझे हर्ष है कि युवक-सम्मेलन का सभापति बना कर आपने मेरे इसी सदगुण पर ठप्पा लगाया है।”

भाषण के अन्त में युवकों से आपने अपील की थी..

“सेवक बनने का यत्न करो, क्योंकि लीडरों की अपेक्षा आर्य जाति को सेवकों की बहुत अधिक आवश्यकता है। जब कभी आप का पैर डगमगाने लगे तो राम के सेवक हनुमान का स्मरण कर लिया करो।... नव युवको! मैं पूछता हूँ, क्या तुम में से कोई भी दयानन्द रूपी राम का लायक हनुमान बनने का यत्न न करेगा? महावीर के बिना दयानन्द का काम अधूरा पड़ा है। मुझे पूरी आशा है कि दयानन्द के काम को पूरा करने के लिए पाप की लंका का विध्वंस करने के लिए तुम्हीं में से महावीर निकलेंगे।”

- अशोक सहगल
(प्रधान) आर्य समाज राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली

सम्पादकीय

-आचार्य गवेन्द्र

आर्य जगत् में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी

आर्य जगत् में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का नाम और कार्य आर्य समाज के संस्थापक और युग-प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व और कृतित्व के ठीक बाद बड़े सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है। महर्षि के हृदय की पीड़ा को समग्र रूप से यदि किसी ने जाना तो वे श्रद्धानन्द ही थे। उन्होंने स्वयं को कल्याण मार्ग का एक ऐसा पथिक बनाया जो महर्षि दयानन्द के दिव्य जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर समस्त विश्व के कल्याणार्थ निरन्तर प्रगति-पथ की ओर बढ़ता रहा। "चरैवेति, चरैवेति--जैसे इस महामानव में साकार हो उठा। और जिसकी यात्रा में कहीं विराम शब्द नहीं था।

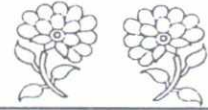
जिस युग में स्वामी श्रद्धानन्द ने कार्य किया, वह युग लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय, श्री अरविन्द, पंडित मदनमोहन मालवीय और महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों का था। उस युग में जो निडर नेता थे, उनमें स्वामी जी अग्रगण्य थे। जो नेता उत्साही थे, उनमें स्वामी जी आगे थे। जिन महा-पुरुषों ने ऋषियों के जीवन पर अपनी जीवन-चर्या बनाई, उनमें भी स्वामी जी अग्रगण्य थे। स्वामी जी जीवन भर वीर योद्धा की तरह रहे और शहीद होकर भारतीयों के सम्मुख एक अदर्श जीवन रख गये।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने युग में स्वराज्य आंदोलन, अछूताद्वार, शुद्धि आंदोलन, जन्मगत जाल-पात का विरोध, दलितोद्धार, नारी शिक्षा, गुरुकुलों की स्थापना, आर्यसामाजिक संगठन की सुदृढ़ता के लिए आजीवन कार्य किया। कोई भी

क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसमें उन्होंने कोई कमी छोड़ी हो, बल्कि यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि जितना उन्होंने किया, उतना किसी ने भी न किया होगा। आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के 64 वर्ष बाद भी स्वामी श्रद्धानन्द का कार्य जाति के नाम आह्वान उतना ही प्रासंगिक है जितना उस समय था। आर्यो संगठित हो जाओ। यह तो शाश्वत सत्य है कि 'संधे शक्तिः कलौ युगे'। आपके संगठन में शक्ति होगी, तो आपकी सभी बातें मानी जाएंगी। स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा था- आर्य पुरुषों! सोचो

कि वे कौन से सिद्धांत थे, जिन्होंने एक लंगोट बंद साधु को वह शक्ति प्रदान की थी, जो इस समय महाराजाओं में भी नहीं दिखाई देती। पता लगाओं कि आर्यसमाज को स्थापित करने से ऋषि का क्या प्रयोजन था। दयानन्द की जीवन-यात्रा के मार्ग पर पथ-प्रदर्शन के लिए, उन चिन्हों की खोज करो और जिस समय उन्नति का शिखर बड़ा ऊँचा और भयावना प्रतीत हो, उस समय इस ज्योति-स्तम्भ की ओर टकटकी लगा कर ऊपर चढ़ते जाओ। फिर देखो कितनी सरलता से मार्ग समाप्त हो जाता है।

महर्षि दयानन्द के लिए श्रद्धा के उद्गार व्यक्त करने वाले उस महाबलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन भी उतना ही महान् था।



हे युग के भगीरथ!

स्वामी तुम्हारी कृपा से ही भारत में लहराता है आज तिरंगा।
गांधी को तुमने बनाया महात्मा, देश का रोग किया झट चंगा।
रोये थे फूट के, गंगा किनारे पै, देखा जो देश का डंग-कुडंग।
हे युग के भगीरथ! भारत में लाये गुरुकुल की गंगा ॥

चाँदनी चौक में तान के सीना देश को ओज का पाठ पढ़ाया।
मुर्दा हुआ था ये देश समूचा, आ के तुम ने फिर से जिलाया।
राम कहूँ तुम्हें कृष्ण कहूँ मैं, शुद्धि सुदर्शन चक्र चलाया।
पानी जो मांगने आया था कातिल, तूने उसे निज खून पिलाया ॥

व्यक्ति कहूँ या समाज कहूँ मैं कहूँ देव कहूँ इन्सान कहूँ मैं।
कर्ण कहूँ बलि कह दूँ तुम्हें अब दानी कहूँ या कि दान कहूँ मैं।
साध्य कहूँ या कि साधना कह दूँ सिद्धि कहूँ वरदान कहूँ मैं।
प्रश्नः यही है ये सामने मेरे, कि कैसे तुम्हें भगवान् कहूँ मैं ॥

खाने लगे जब भेड़िये देश को जोर से सिंह सी हांक लगाई।
भागो दबाके सभी दुम जोर से वीर ने क्रोध से आंख दिखाई।
श्रद्धा श्रद्धा-विहीन जनों के भी गात में श्रद्धा की बेल उगाई।
राणा कहूँ या शिवा तुम्हें कह दूँ, थी चोटि जनेऊ की लाज बचाई ॥

-सारस्वत मोहन 'मनीषी'

प्रत्येक शक्ति का सदुपयोग है सेवा

सच्ची सेवा का उदय उसी दिन हो जाता है जब व्यक्ति बुद्धि से सेवा करने का निर्णय करता है और बदले में कुछ नहीं चाहता।

जो व्यक्ति परिस्थितियों की दासता से मुक्त है वही स्वतंत्र है। स्वतंत्र व्यक्ति ही सेवा कर सकता है। जब व्यक्ति यह सोचता है कि यह शरीर मिटने वाला है, नश्वर है। पता नहीं कब छूट जाए, जब शरीर में क्षमता है तो मन में अच्छा भाव रखकर सेवा करें।

चाहे रुपये पैसे हों या न हों, पद कुर्सी हो या न हो, सेवा भी कई तरीकों से की जा सकती है। भूखे को अन्न देना, प्यासे को पानी देना, निर्वस्त्र को वस्त्र देना, इतनी ही सेवा काफी नहीं है। किसी को दो मीठे शब्द बोल देना, उसके दुःख को हरना, किसी कुसंगी को सत्संगी बनाना, अभक्त को भक्त बनाना, किसी की उलझनें सुलझाना, किसी को सन्मार्ग दिखाना, किसी को पढ़ाना, सान्त्वना देना ये भी सेवा है परन्तु यह सब धीरे-धीरे होते हैं।

आपके पास शारीरिक बल है, मानसिक बल है, बौद्धिक बल है जितने भी बल हैं चाहे थोड़ा-सा ही क्यों न हो, उसका आप ईश्वर की विराट सृष्टि में प्रभु की प्रसन्नता के लिए सदुपयोग करो। आप देखेंगे ज्यों ज्यों आप सेवा करते जाते हो त्यों-त्यों आपकी योग्यता बढ़ती जाती है। जो व्यक्ति अपनी योग्यता, शक्ति, सम्पत्ति को सदुपयोग में नहीं लगाते वह भाग्यहीन हैं। यही चीजें उन्हें बन्धन में डालती हैं।

ईश्वर ने हमें सेवा की क्षमता दी है तो प्रभु की हम पर बड़ी कृपा है। अगर कोई हमारी सेवा ले रहा है तो हमें उसका भी धन्यवाद करना चाहिए। अगर हमारे पास कुछ चीज है हम उसे प्रयोग में नहीं लाते तो किस काम की।

सच्चा सेवक दुःख मिटाना ही सेवा नहीं समझता, वह तो सुख पहुंचाना सेवा

- आचार्य अनिल शास्त्री

समझता है। जब हम सुख बांटेंगे तो दुःख रहेगा ही नहीं। निष्काम सेवा उत्तम मानी गई है। माता-पिता और वृद्धों की सेवा संरक्षण देती है, यह सेवा कभी खाली नहीं जाती। माता-पिता के हृदय से निकले हुए आशीर्वाद बुद्धि, शान्ति, सुख-सम्मान और दीर्घ आयु प्रदान करते हैं। वह बड़े भाग्यशाली होते हैं जिन्होंने माता-पिता और गुरु की सेवा को महत्व दिया है, सेवा का महत्व समझा है।

गरीबों, रोगियों, भूखे-प्यासों, विक्लांगों, निसहायों की सेवा मनुष्य को अच्छे आचरण वाला, निराभिमानी, शान्त और धीर बनाती है।

गुरु की सेवा तो बड़े पुण्यकर्मों का समय उदित होने पर ही भाग्य से प्राप्त होती है। किसी-किसी भाग्यशाली को ही यह सेवा प्राप्त होती है। गुरुसेवा वाले व्यक्ति को सब कुछ मिल जाता है, कुछ पाना बाकी नहीं बचता।

सेवक में इतनी शक्ति होती है कि जब वह शुद्धभाव से सेवा करता है तो मुश्किल में प्रभु उसकी सहायता करने आ जाते हैं। ऐसी सेवा करो कि अपने दुश्मन को भी जीत लो, उसके दुःखों को हटाओगे तो यह तुम्हारा हो जाएगा। सेवा बहुत ऊंची है। अगर मनुष्य भाव से सेवा करे तो शिखर तक पहुंच जाता है। शिखर पर पहुंचने के बाद ही उसे अपनी सफलता का आभास होता है।

संसार की सभी चीजें मनुष्य को बन्धन में डालती हैं, सेवा सारे बन्धनों से मुक्त कराती है। सेवा ऐसा गुण है जिसे अपनाने के काम, क्रोध, लोभ जैसे नरक के द्वार भी बंद हो जाते हैं।

जैसे फल का बीज लगाने से वर्षों तक फल मिलते हैं ऐसे ही सेवा का बीज शान्ति, आनन्द, सन्तुष्टि, हर्ष, उल्लास, निराभिमानता और धीरता का फल देता

अमृत वचन

1. जो कर्म में कुशलता, वाणी में मधुरता, मन में प्रसन्नता, हर स्थिति में समता बनाए रखता है, वह योगी है।

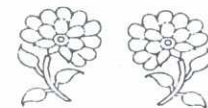
2. मर्यादा जीवन का माधुर्य है, खुशबू है और धर्म का सूत्र। सुविधा में मर्यादित रहना सरल है, किन्तु विपत्ति के समय स्वयं को नियंत्रण में रखना जीवन का अनुपम सौंदर्य है।

3. राहों में ट्रैफिक की सुव्यवस्था के लिए खींची गई रेखाएं दर्शाती हैं कि सुरक्षित घर पहुंचने के लिए नियमों का पालन जरूरी है, मर्यादाहीन होकर चलने से दुर्घटनाएं होती हैं।

4. कलाकृति बनाने वाला कलाकार पहले रेखाएं बनाता है, बाद में उनमें रंग भरता है, रंग भरते समय वह ध्यान रखता है कि रंग रेखाओं से बाहर न चला जाए, क्योंकि रंग बाहर जाते ही आकृति का सौन्दर्य चला जाता है। इसी तरह महापुरुषों के द्वारा बताए पथ पर चलना, जीवन को सौन्दर्य से परिपूर्ण बनाकर चलना है।

5. अन्याय, अत्याचार और भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए थोड़ी-सी मधुर क्रांति होनी चाहिए, पाखण्ड और अंधविश्वास को हटाने के लिए समाज से भ्रान्ति हटनी चाहिए, सुख, समृद्धि और आनन्द प्राप्ति के लिए मन में शांति होनी चाहिए।

- श्री भीष्म लाल
सम्पादक,
अखण्ड दिल्ली



क्यों लड़ते-झगड़ते हैं लोग?

किसी जंगल में दो साधु एक आश्रम में रहते थे। निरंतर साधना में लीन रहकर दोनों ने अपने मन की वृत्तियों को साध लिया था। उनके पास नजदीक के गांव-कस्बों के लोग अपनी समस्याएं लेकर आते और उनके रामाधान पूछते। वे ध्यानपूर्वक सबकी बातें सुनते और उन्हें कोई न कोई रास्ता जरूर सुझाते। ऐसे ही कई बार उन्होंने लोगों के झगड़े सुलझाए। एक दिन एक साधु ने दुसरे से कहा-लोग न जाने आपस में लड़ते-झगड़ते क्यों हैं? इन झगड़ों का कारण क्या होता होगा? क्यों न एक बार हम भी लड़कर देखें। दूसरा बोला-नहीं भाई, हमारी प्रवृत्ति इस प्रकार की नहीं है। हमारे हृदय में प्रेम और शांति के सिन्धु और कुछ नहीं है। फिर भी तुम कहते हो तो झगड़कर देख लेते हैं। यह सुनकर पहले साधु ने फलों की एक टोकरी एक कोने में

रखकर कहा-देखो यह टोकरी मेरी है। इसे हाथ भी न लगाना। दूसरा बोला नहीं भाई यह टोकरी तो मेरी है, मैंने इसमें फल इकट्ठे किए हैं, तुम भी फल तोड़कर अपनी दूसरी टोकरी बना लेना। यह सुनकर पहले ने कहा- अच्छा तो तुम ही यह टोकरी रख लो। इसमें तुम्हारा परिश्रम लगा है। वैसे भी आज मेरी इच्छा कुछ खाने की नहीं है। इस पर दोनों साधु खिलखिलाकर हंस पड़े। एक झगड़ा शुरु होने से पहले ही समाप्त हो गया। दूसरे साधु ने कहा- हम अपने मन को जीत चुके हैं। हमारे भीतर स्व की भावना समाप्त हो चुकी है, इसलिए हम लड़ ही नहीं सकते। ऐसी ही भावना समाज के हर व्यक्ति के भीतर भरनी होगी।

-प्रेरक प्रसंग

श्रीमती कमला महाजन
पुराना राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

आत्मा

प्राणीमात्र के भीतर जो चेतना है वही उसकी आत्मा है। इस चेतना-शक्ति के कारण ही मन, शरीर इन्द्रियां आदि सक्रिय होती हैं। और अपने अपने गुण धर्म के अनुसार कार्य करती हैं।

यह आत्मा सूक्ष्म है, एवं शक्ति स्वरूप है। इस लिये इसका प्रत्यक्ष दर्शन नहीं होता। आत्मा अदृश्य है। उसे देखा नहीं जा सकता। उसका अनुभव किया जा सकता है। चित्त में वासनयें हैं जिनसे विभिन्न प्रकार के विचारों की तरंगें उठती हैं। इन तरंगों के कारण आत्मा का अनुभव प्रत्यक्ष रूप से सभी को नहीं होता। यदि चित्त की वृत्तियों का निरोध कर दिया जाये तो आत्मा का अनुभव हो सकता है। वासना के रहते आत्मा की अनुभूति हो ही नहीं सकती।

परमपूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की महिमा

- प - परम पूजा के योग्य, आपकी छवि भी धरा पर संत सम्राट समान।
र - रवि शशि रहेंगे गगन में, तब तलक आपकी सदा अमर रहेगी शान।
म - मन तन धन सबका दिव्य बनाने वाले, आप वेदों का किया प्रचार।
पू - पूर्ण अखण्ड एक परमात्मा ओ३म् को माना सब जीवों का आधार।।
ज - जड़-चेतन को जान, आत्मज्ञान का सार दर्शाया सत्यार्थ प्रकाश में।
य - यम नियम आसन प्रत्याहार, प्राणायाम, समाधि का भाव दिल में।।
म - मनुज को महामानव बनाने हेतु, आर्यसमाज की स्थापना।
ह - हर्षित रहे सब नर नारी मिथ्या पाखंड, जड़ पूजा से दूर रहे भावना।।
र - रग-रग में वैदिक ज्ञान राष्ट्र भक्ति कृष्णन्तोविश्वमार्यम् छाया था।
षि - सिवाय मोक्ष के कुछ नहीं, जन्म-मरण आसक्ति का ही पसारा था।।
द - दशों दिशा में आज गूंज रहा है, श्रेष्ठ आर्य संस्कृति का नजारा।
या - याद दिला रहा सबको, स्वामी श्रद्धानन्द और पं. लेखराम का नारा।।
न - नव सृजन हो भावी पीढ़ी का, सबको मिले गुरुवर वृजानंद जैसा।।
द - दशों इन्द्रियों को वशकर, मनुज देवत्व का पा पाता असली आभार।
स - सत्य पर अड़ा वही, आर्यसमाज के दस नियमों से पाता शृंगार।।
र - रक्त की हर बूंद में समाया था, भारत माँ का उतारना भार।
स् - स्वयं को तपा योग अग्नि में रखा, दर्शाया सबको चारों वेदों का सार।।
व - वंशकुटुम्ब समाज राष्ट्र उत्थान में, यज्ञ उपासना और सुसंस्कार ।।
ती - तीन ताप को हराते हैं, सुख समृद्धि और शांति देते हैं करतार।।

ऐसी भाव भरी श्रद्धांजलि दे करता हूँ कोटि प्रणाम।
सभी आर्य भाई बहनों के हाथों में रहे नेक काम ।।



ऋषि के प्रति

दीपक तेरा बुझ न सकेगा जलता सदा रहेगा।
दिश गगन की मोह-रात्रि में सदा प्रकाश करेगा ।।
मनोयोग से इसे जलाया,
मन का कल्मष दूर भगाया,
हटा सभी भय दूर, सभी में पौरुष ज्योति भरेगा ।
दीपक तेरा बुझ न सकेगा जलता सदा रहेगा ।।
वर्ण भेद और जाति श्रेष्ठता,
निज स्वार्थों में पड़ी मनुजता,
गिर खाई को पाट सभी में समता भाव भरेगा ।
दीपक तेरा बुझ न सकेगा जलता सदा रहेगा ।।
देश द्रोहिता, परनिंदा को,
आत्म प्रशंसा के फन्दा को,
हठ, काटकर प्रेम भाव से राष्ट्र भक्ति भरेगा ।
दीपक तेरा बुझ न सकेगा जलता सदा रहेगा ।।
नित सुख में जो पड़े हुए हैं,
जिस गान सच अड़े हुए हैं,
भोगसुख के उपासकों में विरक्ति भाव भरेगा ।
दीपक तेरा बुझ न सकेगा जलता सदा रहेगा ।।
अपने ही तिल-तिल जलकर,
त्याग तपस्या का बल देकर,
वेद ज्ञान से तममय पथ ज्योतिर्मयी करेगा ।
दीपक तेरा बुझ न सकेगा जलता सदा रहेगा ।।

भारत बनाम मानवतावाद

अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि है, भारत मानवता की जन्मभूमि है। नर का तन मिलना हमारे कर्मों के फल के अनुसार ईश्वरीय विधान है परन्तु विशेष विचारणीय तथ्य यह है कि नर-तन की पूर्णता तभी है जब उसमें नर मन का निवास हो।

वेदोद्धारक देव दयानन्द महाराज मनुष्य की परिभाषा बताते हुए कहते हैं—

“मनुष्य उसी को कहना जो मननशील हो स्वात्मवत् अन्यो के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझे। पापी दुष्ट, अन्यायी, अत्याचारी चाहे कितना ही सशक्त हो, चाहे चक्रवर्ती सम्राट भी क्यों न हो उससे कभी न डरे उसका प्रतिवाद, अप्रियाचरण सदा करे। जहाँ तक हो सके अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा करें। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले जावे, परन्तु इस मनुष्यपन-रूप धर्म से पृथक कभी न हों।”

मानवता का दूसरा नाम है, दूसरों को प्रति हम कितने संवेदनशील हैं? क्या हम वास्तव में ऐसे मर्द हैं जो किराँ का दर्द होकर हम दर्द बन सकें।

दर्द दूसरों को बांटे शैतान वही है।

दर्द दूसरों का बांटे इन्सान वही है।

एक बार जर्मनी के पत्रकारों ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से साक्षात्कार में कुछ प्रश्न पूछे थे कि यदि संसार से अमेरिका समाप्त हो जाय तो क्या हानि होगी? नेताजी ने जवाब दिया विश्व की दौलत रामाप्त हो जायेगी। पत्रकारों ने पूछा यदि जर्मनी नष्ट हो जाय तो क्या होगा? नेता जी कहने लगे यदि जर्मनी नष्ट हो जाय तो दुनियाँ से विज्ञान-समाप्त हो जायेगा। फिर पूछा गया कि ईराक समाप्त हो जाय तो? उत्तर मिला कि अगर ईराक समाप्त हो गया तो देशभक्ति समाप्त हो जायेगी। क्योंकि ईराक के लोग

— कैलाशचन्द्र शास्त्री पहले से देशभक्ति में प्रसिद्ध हैं। फिर पत्रकारों ने पूछा यदि यूरोप समाप्त हो जाय तो फिर क्या होगा? नेताजी कहते हैं दुनियाँ से सुन्दरता समाप्त हो जायेगी। अन्त में पत्रकारों ने पूछा कि यदि भारत नष्ट हो जाय तो? तब नेताजी सुभाष चन्द्र कहते हैं यदि भारत समाप्त हो जाय तो दुनियाँ से मानवता सदा-सदा के लिए नष्ट हो जायेगी। दुनियाँ को मानवता का पाठ पढ़ाने वाला देश भारतवर्ष ही है। इसलिए हमारा वेद कहता है — “मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।” अर्थात् पहले मनुष्य बनो एवं संसार को उत्तम सन्तान दो।

रामायण में जब मेघनाद के बाण से लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये तब राम विलाप करते हुए कहते हैं:— देशे-देशे कलत्राणि देशे-देशे बान्धवाः।

तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः॥ देश में जगह-जगह पर मुझे मित्र, बन्धु-बान्धव मिल सकते हैं। परन्तु मुझे ऐसा कोई स्थान दिखाई नहीं देता जहाँ छोटा भाई मिल जाय। जब लक्ष्मण को होश आया तो लक्ष्मण रो पूछा गया — लक्ष्मण! तुम्हें कितनी चोट लगी? लक्ष्मण कहते हैं:—

इयन्मात्रमहं वेद्मि स्फुटं यो वेत्ति राघवम्।

वेदना राघवेन्द्रस्य केवलं व्रणिनो वयम्॥

लक्ष्मण ने कहा कि मैं तो केवल बाण के घाव को ही जानता हूँ, चोट तो राम के हृदय में हुई है। मैं तो केवल मूर्च्छित हुआ हूँ। वेदना कितनी हुई है यह राम से पूछो। कितना अगाध स्नेह है। मानवता, भातृप्रेम का ऐसा दिव्य उदाहरण धरती में और कहाँ मिलेगा। गेंद की तरह गद्दी को ठोकर भारने वाले एवं एक भाई दूसरे भाई के लिए जान देने के लिए तैयार रहने वाले भाई आज कहाँ हैं? भारत का सम्पूर्ण

साहित्य “वसुधैव कुटुम्बकम्” का पाठ पढ़ाते हैं। रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में सैकड़ों ऐसे ही मानवता के उदाहरण मिलते हैं। परन्तु आज कुछ मुस्लिम एवं ईसाई लोग अपने ही भारत एवं भारतीयता का विरोध करते हैं। यहाँ के निवासियों को उग्रवादी एवं आतंकवादी कहते हैं। परन्तु मैं सबके लिए कहना चाहूँगा कि हिन्दू बहुत सहनशील है जिस दिन यहाँ का निवासी उग्रवादी बन जायेगा देश की सारी समस्या मिट जायेगी। हिन्दू अपने पूर्वजों के द्वारा प्रदत्त संस्कारों से सदैव मानव एवं मानवता की रक्षा करने वाला है। सच्चा हिन्दू तो मनुष्य की परिधि से हटकर अन्य प्राणियों पर भी समभाव एवं दयाभाव बांटता है।

भारत, भारतीय एवं भारतीयता संसार को केवल यही सन्देश देते हैं:—

निजकर्म को करते हुए आलोक का अनुगमन करो,

विज्ञानप्रद आलोक के शुभगर्ग की रक्षा करो।

उलझन रहित कर्तव्य के, तुम विश्व विस्तारक बनो,

मानव बनो! मानव बनो! तुम दिव्यतम मानव बनो॥

स्वामी श्रद्धानन्द

चरण स्पर्शों से उन्हीं के पूत गंगाधर थी। वाणियों से वेद सरिता प्रेम की आगार थी॥ ज्ञान से था बुद्ध आत्मा, सत्य से मन शुद्ध था। मानवी कल्याण तप से, आत्म तेज प्रबुद्ध था॥ सब जनों की उन्नति में, एक उनका ध्यान था। आर्य होवे जगत् सारा, मनुज मात्र समान था॥ परम श्रद्धानन्द थे वे, ओज की इक मूर्ति थे। त्याग और बलिदान में भी, आहुति की मूर्ति थे॥ देश सेवा जाति सेवा ध्येय था, इक लक्ष्य था। दलित सेवा में बताओ, कौन जो समकक्ष था॥ आर्य संस्कृति धर्म वैदिक में उन्हें विश्वास था। दास थे जो मनुजता के, जग उन्हीं का दास था॥

— डॉ. इन्द्रसेन जेतली

सर्दी के मौसम में कैसे रखें शरीर का ध्यान

स्वास्थ्य रक्षा

ऋतुओं के साथ-साथ शरीर की रसायनिक प्रक्रियाओं में बदलाव आता है। अतः मौसम के अनुकूल भोजन से इन परिवर्तनों का हम सफलतापूर्वक सामना कर सकते हैं। आइए देखें सर्दी के मौसम में भोजन का कैसे ख्याल रखें-

- रास्ता का सेवन कम करें।
- ठण्डे पेय पदार्थ जैसे नारियल पानी, छाछ, नींबू पानी से परहेज करें।
- नॉर्मल रूम टेम्परेचर से कम के खाद्य पदार्थों का सेवन न करें।
- गर्म सूप में मसाले जैसे काली मिर्च, लहसुन, अदरक, प्याज डाल कर लें।
- होल ग्रेन्स जैसे ज्वारी, बाजरा, मकई, जई का उपयोग करें।
- अखरोट, खजूर, अंजीर, बादाम जैसे सूखे मेवों का सेवन करें।
- 2 टमाटर, 1 बिस्किट बड़ी लाल गाजर का जूस ले सकते हैं। अथवा आधा कप आंवले का जूस, 1 चम्मच शहद, चुटकी भर हल्दी डाल कर लें।
- जूस तैयार करने के 20 मिनट के अंदर ही सेवन करें।
- नियमित रूप से व्यायाम करें। दिन में कम से 30-45 मिनट सैर, व्यायाम करें। सुस्ती को दूर रखने हेतु शरीर को गतिशील रखें।
- उचित मात्रा में प्रोटीन्स अवश्य लें। मूंग, मूंगफली, टोफू, फली, सोयामिल्क, सोयाबीन का प्रयोग अवश्य करें।

सोयाबीन एक ऐसा पुष्टिकारक अन्न है, जिसमें प्रोटीन, वसा, खनिज, लवण, लौह, विटामिन 'बी' आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में विद्यमान होते हैं। इसमें मिलने वाला प्रोटीन किसी भी आमिष-निरामिष पदार्थों में पाये जाने वाले प्रोटीन से उन्नत किस्म का होता है। यह प्रोटीन उच्च कोटि का होने के साथ ही 35-40 प्रतिशत तक पाया जाता है।

यह बालक, वृद्ध तथा रोगी किसी के लिए हानिकारक नहीं है। इससे कब्ज और गैस के रोग नहीं होते तथा बालकों का शारीरिक विकारा होता है। इसमें कोलेस्ट्रॉल की मात्रा भी

-श्रीमती नारायणी मलिक

कम होती है। इसके नियमित प्रयोग से बल-वीर्य की वृद्धि होती है। शाकाहारियों को तो प्रकृति के इस अनमोल भेंट का अवश्य प्रयोग करना ही चाहिए। इसमें अति गुणकारी तत्वों की अपेक्षा इसका मूल्य भी काफी सस्ता है। इसके दैनिक उपयोग की निम्नलिखित विधियों हैं-

- सोयाबीन का आटा-इसे पानी में लगभग 10 घंटे भिगो दें। फिर सुखाकर चक्की में इसका आटा पिसवा लें। इसकी अत्यन्त स्वादिष्ट रोटी बनती है। स्वाद में गेहूं के आटे से कुछ अलग होती है। इसके आटे से अनेक व्यंजन तैयार होते हैं। गेहूं के आटे में मिलाकर इससे रोटी, पराठा, हलवा आदि बनाते हैं। इसके आटे को अधिक दिन तक नहीं रखा जा सकता।

-सोयाबीन का दूध-दही- सोयाबीन को लगभग दस घंटे पानी में भिगो दें। फिर इसे बारीक पीसकर समुचित मात्रा में पानी मिलाएं ताकि यह दूध-जैसा हो जाए। इसका स्वाद ठीक करने के लिए पीसते समय इसमें दो-तीन छोटी इलाइची मिला दें तथा दूध को आधे घंटे तक उबालें। गुणकारी और पौष्टिक दूध तैयार हो गया। इस दूध में जामन डालकर दही भी जमाया जा सकता है।

-सोयाबीन का तेल-सरसों तथा मूंगफली की तरह सोयाबीन का भी तेल निकाला जाता है। पौष्टिक होने के साथ ही अन्य खाद्य तेलों से अधिक सस्ता होता है। वनस्पति या सरसों के तेल में स्थान पर इसका प्रयोग कर सकते हैं। इसका तेल सिर में लगाने से बाल काले होते हैं। सोयाबीन के तेल में कुछ बूंद नींबू का रस मिलाकर लगाने से मुहांसे ठीक हो जाते हैं।

- सोयाबीन की बड़ी-योयाबीन का तेल निकालने के बाद इसका जो छिलका बचता है, उससे निर्मित बड़ी पौष्टिक होती है। सब्जी, दाल आदि में डालकर इसको उपयोग में लाते हैं।

- सोयाबीन की चटनी-भिगोए हुए सोयाबीन में अनुपात में नमक-मिर्च इत्यादि डालकर पीस लें। स्वादिष्ट चटनी के रूप में

इसका प्रयोग कर सकते हैं।

- सोयाबीन की खली-पशुओं को इसकी खली खिलाने से दूध की मात्रा बढ़ जाती है। बच्चों के लिए यह दूध बहुत गुणकारी होता है।

सोयाबीन-सम्पूर्ण संतुलित भोजन

सोयाबीन बच्चों के लिए विशेष उपयोगी है। बढ़ती हुई अवस्था में संतुलित भोजन का विशेष महत्व है, जिसमें विभिन्न फलों, सब्जियों आदि से प्रोटीन तथा विटामिन की प्राप्ति होती है। इसका अर्थ हुआ हमें संतुलित भोजन प्राप्त करने के लिए गुणों के अनुसार अलग-अलग फल तथा सब्जियां लेनी होंगी, परंतु सोयाबीन में ये सभी गुण मौजूद हैं। बच्चों के लिए यह दूध का विकल्प भी है।

एक महत्वपूर्ण जानकारी के मुताबिक यदि किसी बच्चे को गाय के दूध की बजाय सोया-दूध पिलाया जाए तो एक सप्ताह के भीतर कोलेस्ट्रॉल घटने का परिणाम स्पष्ट सामने आता है। सोया में 32 प्रतिशत तक कोलेस्ट्रॉल घटाने की क्षमता है। यह एक पोषक भोजन है। इसमें भरपूर विटामिन तथा प्रोटीन मौजूद है साथ ही यह वसाहीन भोजन है। कुपोषित भोजन के कारण ही 90 प्रतिशत रोगी गैस, अपच, तनाव, थुलथुलापन तथा एनीमिया के शिकार देखे जाते हैं। इसमें कार्बोहाइड्रेट की अधिकता नहीं होती। इसके विपरीत इसका प्रयोग रक्ताल्पता को दूर रखता है। सोयाबीन रक्तसंसार को संयत रखता है। यह रेशेदार भोजन है, जो पाचन के लिए सर्वोत्तम है। यह वजन को घटाकर शरीर को स्फूर्ति देता है। उच्च रक्तचाप वाले रोगी के लिए यह उत्तम भोजन है।

सामान्य रूप से सोयाबीन के निम्नलिखित लाभ दिखाई देते हैं-

- यह रक्ताल्पता दूर करता है।
- पाचन शक्ति बढ़ाता है।
- कब्ज दूर करता है।
- कोलेस्ट्रॉल की मात्रा घटाकर हृदय रोगों को दूर रखता है।
- शरीर के विभिन्न तन्तुओं के लिए पोषक है।
- वसा रहित होने के कारण उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए उत्तम है।
- बच्चों के दूध का विकल्प है।

समाचार दर्पण

डॉ. कैलाश चन्द्र 'आर्यरत्न' सम्मान से सम्मानित

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के द्वारा 18.12.2016 रविवार को पूर्व धर्माचार्य डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री को आर्यरत्न सम्मान से विभूषित कर सम्मानित किया गया। वे आर्य समाज में धर्माचार्य पद को पिछले 9 वर्षों से अलंकृत कर रहे थे। डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री जी सामाजिक एवं धार्मिक कार्य में सदैव तत्पर रहे हैं उनकी निष्ठा व कार्यदक्षता को ध्यान में रखकर आर्यसमाज राजेन्द्र नगर के प्रधान अशोक सहगल, मंत्री नरेन्द्र वलेचा तथा समस्त अधिकारियों व इष्टमित्रों के द्वारा उन्हें उपर्युक्त सम्मान से विभूषित किया गया। इस अवसर पर अमृत आर्या जी, श्रीमती जनक चुघ जी, आर्य स्त्री बहावलपुर, श्रीमती आदर्श सहगल जी, श्रीमती जगदीश वधवा जी आर्य महिला आश्रम श्रीमती सावित्री शर्मा श्रीमती लालिता कुमार जी श्री सतनाम अरोड़ा सनातन धर्म मन्दिर श्रीमती नारायणी मलिक जी, श्री सतीश मैहता जी देवेश शास्त्री जी, सतीश कुमार जी, श्री सुरेश चुघ जी ने शुभ आशीर्वाद प्रदान किया आर्य समाज के प्रधान श्री अशोक सहगल जी ने अपने पिता स्व. द्वारका नाथ सहगल की पावन स्मृति में सुन्दर प्रसाद की व्यवस्था की।

-मंत्री



प्रधान श्री अशोक सहगल जी
आचार्य श्री कैलाश जी को
अभिनन्दन पत्र देते हुए।

त्रिदिवसीय वैदिक सत्संग का आयोजन

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के द्वारा विवेकानन्द सिन्धी पार्क में त्रिदिवसीय वैदिक भक्ति सत्संग कार्यक्रम शुक्रवार दिनांक 9 से 11 दिसम्बर 2016 शनिवार तक आयोजित किया गया। जिसका विषय था "ईश्वर हैं या नहीं, ईश्वर की भक्ति क्यों करें तथा ईश्वर का ध्यान कैसे हो" इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आचार्य गवेन्द्र शास्त्री रहें जिन्होंने उपयुक्त विषय पर बड़े ही रोचक, मार्मिक रूप से अपने विचार रखे। अन्तिम दिवसीय प्रवचन प्रो. महेश विद्यालंकार का रहा, उन्होंने भी इसी विषय को बड़े ही सरल एवं सरस रूप से स्पष्ट किया तथा बताया कि मनुष्य का जीवन सांसारिक विषयों को भोगते हुये ही व्यतीत हो जाता है, यदि मनुष्यों ने अपने जीवन का अन्तिम पड़ाव अन्तिम समय भी यदि ईश्वर भक्ति, चिन्तन में व्यतीत कर दिया तो निश्चित रूप से आनेवाला जीवन सार्थक हो जायेगा।

उक्त कार्यक्रम में सुमधुर भजन आचार्य अंकित शास्त्री जी के रहे, उन्होंने मधुर भजनों से उपस्थित सभी लोगों का मन मोह लिया। इस कार्यक्रम के संयोजक श्री सुरेश चुघ जी रहे। वहां उपस्थित लोगों में अशोक सहगल (प्रधान), नरेन्द्र वलेचा (मंत्री, आर्य समाज राजेन्द्र नगर) सावित्री शर्मा, लालिता कुमार, अमृत आर्या, जनक चुघ, आदर्श सहगल, जगदीश वधवा आदि रहे।

प्रसाद व्यवस्था तीनों दिनों में क्रमशः मोती लाल जी बीकानेरवाले, जनक चुघ मंत्राणी आर्य स्त्री समाज बहावलपुर, मेजर वर्मा जी, ने श्रद्धा पुर्वक प्रसाद की व्यवस्था की।

-मंत्री

ओ३म्

दयानन्द योगी आया
वह कौन युवा योगी जागा
जिसका जगना वरदान हुआ ।
वह तरुण तपस्वी तेजस्वी
भारत मां का वरदान हुआ ॥

किसकी गम्भीर गिरा गूँजी
किसकी आवाज बुलन्द हुई।
किसका सुन जागृति का निनाद
स्वप्नों की निद्रा भंग हुई ॥

हम जाग उठे आलस तजकर
करवट ले चेतना जागा ।
हमने देखा दृढ़ व्रत होकर
वह घूम रहा था वैरागी ॥

Printed and published by **Sh. N.M. Walecha** Secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Gurmat Printing Press, 1337, Sangatrashan, Pahar Ganj, New Delhi-55 Ph. : 23561625 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. **Editor : Dr. Kailash Chandra Shastri**